सामाजिक विज्ञान-2016 (प्रथम पाली)

Time : 2 Hrs. 45 Minutes] [Full Marks : 80

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश : देखें 2015 (प्रथम पाली)

Group–A (इतिहास)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही विकल्प चुनें :

1. जर्मन राईन राज्य का निर्माण किसने किया था ? 1

(क) लुई 18वां (ख) नेपोलियन बोनापार्ट

(ग) नेपोलियन III (घ) बिस्मार्क

2. अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना कब हुई थी ? 1

(क) 1848 (ख) 1858

(ग) 1885 (घ) 1920

3. सही शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें :
विश्वव्यापी आर्थिक संकट ..... देश से आरंभ हुआ। 1

4. सही शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें :
हंगरी की राजधानी ..... है। 1

5. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें :
गैरीबाल्डी के कार्यों की चर्चा करें। 3

6. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें :
स्लम पद्धति की शुरूआत केसे हुई ? 3

7. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें :
विश्व बाजार के स्वरूप को स्पष्ट करें। 3

8. निम्न प्रश्न का उत्तर 100 अथवा 120 शब्दों में दें : 7
जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क की भूमिका का वर्णन करें।
अथवा, भारत में मजदूर आन्दोलन के विकास का वर्णन करें।

Group–B (भूगोल)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही विकल्प चुनें :

9. सोपानी कृषि किस राज्य में प्रचलित है ? 1

(क) हरियाणा (ख) पंजाब

(ग) बिहार का मैदानी क्षेत्र (घ) उत्तराखंड

10. देश के बांधों को किसने 'भारत का मंदिर' कहा था ? 1

(क) महात्मा गांधी (ख) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

(ग) पंडित नेहरू (घ) स्वामी विवेकानन्द

11. सही शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

(i) समुद्री क्षेत्र में तट से ..... किमी क्षेत्र तक राष्ट्रीय सम्पदा होती है। 1

(ii) कहलगाँव तापीय विद्युत परियोजना ..... जिला में अवस्थित है। 1

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

12. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें :
बिहार में वन सम्पदा की वर्तमान स्थिति का वर्णन करें।

13. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें : 3
भारतीय कृषि की निम्न उत्पादकता के किन्हीं चार कारणों का उल्लेख करें।

14. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें : 3
पर्वतीय छायाकरण विधि का वर्णन करें।

15. निम्न प्रश्न का उत्तर 100 अथवा 120 शब्दों में दें : 3
भारत के सीमेंट उद्योग का वर्णन करें।

अथवा, पूरे पृष्ठ पर भारत का एक रेखा मानचित्र बनाइए तथा निम्नलिखित को अंकित 7
कीजिए :

(क) कोयला क्षेत्र — झरिया (ख) लौह-इस्पात कारखाना — बोकारो
(ग) तेल क्षेत्र — डिगबोई (घ) तेल शोधक कारखाना — मथुरा
(ङ) परमाणु शक्ति केन्द्र — तारापुर।

अथवा, केवल नेत्रहीन छात्रों के लिए :
भारत में चावल की खेती का वर्णन करें। 7

Group–C (राजनीति विज्ञान)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही विकल्प चुनें :

16. भारत में औरतों के लिए आरक्षण की व्यवस्था किस संस्था में है ? 1
(क) लोक सभा (ख) विधान सभा
(ग) पंचायती राज (घ) राज्य सभा

17. राजनीतिक दलों की नींव सर्वप्रथम किस देश में पड़ी ? 1
(क) ब्रिटेन (ख) भारत
(ग) फ्रांस (घ) संयुक्त राज्य अमेरिका

18. निम्न प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों में दें :
बंधुआ मजदूर किसे कहते हैं ? 2

19. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें :
ग्राम पंचायत के प्रमुख अंगों का वर्णन करें। 3

20. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें :
सत्ता में साझेदारी से आप क्या समझते हैं ? 3

21. निम्न प्रश्न का उत्तर 100 अथवा 120 शब्दों में दें :
राजनीतिक दलों के छः मुख्य कार्यों का वर्णन करें। 7
अथवा, भाषा नीति क्या है ?

Group–D (अर्थशास्त्र)

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

निम्न प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों में दें :

14. आधारभूत संरचना किसे कहते हैं ? 2

निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें :

15. समावेशी विकास से आप क्या समझते हैं ? 3

निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें :

16. बचत क्या है ? 3

निम्न प्रश्न का उत्तर 100 अथवा 120 शब्दों में दें :

17. भारत में वैश्वीकरण का वर्णन करें। 7

अथवा, विश्व व्यापार संगठन क्या है ? यह कब और क्यों स्थापित किया गया ?

Group–E (आपदा प्रबंधन)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही विकल्प चुनें :

18. निम्न में से कौन मानव जनित आपदा है ? 1

(क) साम्प्रदायिक दंगे (ख) आतंकवाद
(ग) महामारी (घ) इनमें से सभी

19. नदियों में बाढ़ आने का प्रमुख कारण क्या है ? 1

(क) जल की अधिकता (ख) नदी की तली में अवसाद का जमाव
(ग) वर्षा की अधिकता (घ) इनमें से कोई नहीं

20. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें :

आपदा से आप क्या समझते हैं ? 4

उत्तरमाला

1.(ख), 2.(घ), 3.अमेरिका, 4.बुडापेस्ट।

5.गैरीबाल्डी इटली का एक राष्ट्रवादी था। उसे इटली के एकीकरण की 'तलवार' कहा जाता है। वह तलवार के बल पर इटली का एकीकरण करना चाहता था। इसके लिए उसने सशस्त्र युवकों की टुकड़ी तैयारी की जो 'लाल कुर्ती' कहलाते थे। नेपुल्स एवं सिसली को जीतकर उसने इन्हें विक्टर इमैनुएल को सौंप दिया। वह पोप के राज्य पर भी आक्रमण करना चाहता था, लेकिन कावूर ने इसकी अनुमति नहीं दी।

6.औद्योगीकरण ने स्लम पद्धति की शुरूआत की। मजदूर शहरों में छोटे-छोटे घरों में जहां किसी तरह की सुविधा उपलब्ध नहीं थी रहने को बाध्य थे। आगे चलकर उत्पादन के उचित वितरण के लिए आंदोलन शुरू किए। चूंकि पूंजीपति द्वारा उनका बुरी तरह शोषण किया जाता था इसलिए उन्होंने अपना संगठन बनाकर पूंजीपतियों के खिलाफ वर्ग-संघर्ष की शुरूआत की।

7. विश्व बाजार के स्वरूप—18वीं सदी के मध्य भाग से इंगलैंड में बड़े-बड़े कारखानों में वस्तुओं का उत्पादन आरंभ हुआ। यह कारखानों को वाष्प इंजन के द्वारा चलाया जाता था। इस प्रक्रिया से वस्तुओं का उत्पादन काफी बढ़ा। उत्पादन के बढ़ते आकार के हिसाब से कच्चे माल की आवश्यकता हुई और तब इंगलैंड ने उत्तर अमेरिका, एशिया (भारत) और अफ्रीका की ओर अपना ध्यान खींचा वहां उसे पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल और बना-बनाया एक बाजार भी मिला। इसी दो चीजों पर औद्योगिक क्रान्ति सफल होता इसलिए इंगलैण्ड इन्हीं दो चीजों पर स्थायी अधिकार का प्रयास शुरू किया। जिसके परिणामस्वरूप उपनिवेशवाद नामक एक नवीन (नया) शासन प्रणाली का उदय हुआ। मैनचेस्टर, लिवरपुल, लंदन इत्यादि का उदय इसी कारण से हुआ।

8.1870 के पूर्व जर्मनी अनेक छोटे-बड़े राज्यों में बँटा था। यह सही अर्थ में एक राष्ट्र न होकर जर्मन-भाषी राज्यों का समूह था। 19वीं शताब्दी के आरंभ में नेपोलियन के कार्यों से

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

जर्मन राष्ट्रवाद का उदय हुआ और एकीकरण की भावना में बदलाव हुई।

बिस्मार्क के पूर्व एकीकरण के प्रयास— जर्मनी में राष्ट्रवाद को दार्शनिकों एवं चिंतकों ने भी बढ़ावा दिया। कांट, फिक्टे, हीगेल, ग्रीम बंधुओं ने जर्मनों में राष्ट्रवादी भावना प्रज्वलित कर दी। तरुण आंदोलन ने नवयुवकों में राष्ट्रवादी चेतना जगाई, परंतु मेटरनिक ने इसे कुचल दिया। मेटरनिक के पतन के बाद जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया में गति आई। 1849-60 के बीच भी एकीकरण के प्रयासों को सफलता नहीं मिली।

बिस्मार्क और जर्मनी का एकीकरण— 1862 में बिस्मार्क प्रशा का चांसलर बना। जर्मनी के एकीकरण के लिए उसने "रक्त और लौह" (Blood and Iron) की नीति अपनाई। सबसे पहले उसने प्रशा को आर्थिक और सैनिक दृष्टि से मजबूत किया। तत्पश्चात उसके तीन युद्ध किए।

(i) 1864 में डेनमार्क को पराजित कर शेल्शविग पर अधिकार कर लिया।

(ii) 1866 में सेडोवा के युद्ध में ऑस्ट्रिया को पराजित कर होल्सटीन पर अधिकार कर लिया। 22 उत्तरी राज्यों का उत्तरी जर्मन महासंघ बनाकर विलियम प्रथम को इसका राजा बनाया गया।

(iii) 1870 में सेडान के युद्ध में फ्रांस की पराजय के बाद 1871 की फ्रैंकफर्ट संधि द्वारा दक्षिणी राज्य उत्तरी महासंघ में मिल गए। इस प्रकार, जर्मनी का एकीकरण पूरा हुआ।

अथवा, भारत में मजदूर आंदोलन— यूरोप में औद्योगिकरण और मार्क्सवादी विचारों के विकास का प्रभाव अन्य देशों पर भी पड़ा और भारत में भी औद्योगिक प्रगति के साथ-साथ मजदूर वर्ग में चेतना जागृत हुई। 20वीं सदी के शुरू वर्षों में सुब्रहण्य अय्यर ने मजदूरों के यूनियन के गठन की बात कही तो दूसरी ओर स्वदेशी आंदोलन का भी प्रभाव मजदूरों पर पड़ा। सन् 1917 ई. में अहमदाबाद में प्लेग की महामारी के कारण मजदूरों को शहर छोड़कर जाने से रोकने के लिए मिल मालिकों ने उनके वेतन में वृद्धि की थी जो महामारी खत्म होने पर समाप्त कर दी गई। इससे मजदूर असंतुष्ट थे। क्योंकि प्रथम विश्वयुद्ध और उससे उत्पन्न महंगाई के कारण बोनस की कटौती उनके लिए कष्टदायक थी। गांधीजी ने मजदूर के मांगों का समर्थन किया और मिल मालिकों के साथ मध्यवस्थता का प्रयास किया। अन्त में उन्हीं के सुझाव पर बोनस पुनः बहाल किया गया और इसकी दर 35% निर्धारित की गई। सन् 1917 की रूसी क्रान्ति का कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल तथा श्रम संगठन की स्थापना कुछ ऐसी विदेशी घटनाएँ थी, जिनका प्रत्यक्ष प्रभाव भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं मजदूर वर्ग दोनों पर पड़ा। 31 अक्टूबर 1920 को कांग्रेस पार्टी ने ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस AITUC की स्थापना की। सी.आर. दास ने सुझाव दिया कि कांग्रेस द्वारा किसानों एवं श्रमिकों को राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल किया जाए और इनकी मांगों का समर्थन किया जाए।

कालान्तर में वामपंथी विचारों की लोकप्रियता में मजदूर आन्दोलन को अधिक सशक्त बनाया जिससे ब्रिटिश सरकार की चिंता बढ़ी और मजदूरों के विरूद्ध दमनकारी उपाय भी किए गए। इस क्रम में मार्च 1929 में कुछ वामपंथी नेताओं के विरुद्ध मेरठ षड्यंत्र के नाम पर देश द्रोह का मुकदमा चलाया गया। इसी बीच 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हुआ जिसे आरम्भ में मजदूरों का समर्थन प्राप्त रहा। लेकिन 1931 में ऑल इंडिया नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस 'हिन्द मजदूर संघ' और यूनाइटेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस नामक तीन संगठनों में यह विभाजित हुआ। इसके बाद भी राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रमुख नेताओं जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस आदि द्वारा समयावधि विचारों के प्रावधीन मजदूरों का समर्थन जारी रहा।

9. (घ) उत्तराखंड, **10.** (ग)

11. (i) 12. 2 किलोमीटर, (ii) भागलपुर।

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

12. बिहार विभाजन के बाद वन विस्तार में बिहार राज्य दैयनीय स्थिति में आ गया है। क्योंकि वर्तमान बिहार में अधिकतम भूमि कृषि योग्य है। मात्र 6764.14 हेक्टेयर में वन क्षेत्र बच गया है। यह भौगोलिक क्षेत्र का मात्र 7.1 प्रतिशत है। बिहार के 38 जिलों में से 17 जिलों में से वन क्षेत्र समाप्त हो गया है। पश्चिमी चंपारण, मंगेर, बांका, जमुई, नवादा, नालन्दा, गया, रोहतास, कैमूर और औरंगाबाद जिलों के वनों की स्थिति कुछ बेहतर है। जिसका कुल क्षेत्रफल 3700 वर्ग किलोमीटर वन के नाम पर केवल झाड़, झुरमुट बच गये है।

13. भारतीय कृषि के निम्न उत्पादकता के कारण—(i) भारतीय किसानों का अशिक्षित एवं निर्धन होना, (ii) कृषि कार्य के लिए मॉनसून पर निर्भर रहना, (iii) कृषि कार्य में आधुनिक कृषि तकनीकों का बहुत कम प्रयोग होना, (iv) कृषि पर जनसंख्या की अधिक दबाव होना, (v) घटता हुआ कृषि भूमि क्षेत्र, (vi) खेतों का छोटा आकार, (vii) कृषि उत्पादों का उचित मूल्य न मिलना, (viii) कृषि में वाणिज्यीकरण का अभाव।

14. पर्वतीय छायाकरण विधि— इस विधि के अन्तर्गत उच्चावच प्रदर्शन के लिए भू-आकृतियों पर उत्तर पश्चिम कोने पर उपर से प्रकाश पड़ने की कल्पना की जाती है। इसके कारण अंधेरे में पड़ने वाले हिस्से को या ढाल को गहरी आभा से भर देते हैं जबकि प्रकाश वाले हिस्से या कम ढाल के हल्की आभा से भर देते हैं। या फिर खाली भी छोड़ सकते हैं।

इस विधि से पर्वतीय देशों के उच्चावच को प्रभावशाली ढंग से दिखाना संभव हो पाता है।

15. भारत में सीमेंट उद्योग— आवास निर्माण एवं देश के ढांचागत क्षेत्र में सीमेंट की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सीमेंट उत्पादक देश है। भारत में अनेक प्रकार के सीमेंट का उत्पादन होता है। जैसे साधारण पोर्टलैंड सीमेंट, पोर्टलैण्ड ब्लास्ट फर्नेस, स्लैग सीमेंट, ऑयल वेल एवं सफेद सीमेंट। सीमेंट उद्योग के लिए कच्चा माल जैसे चुना पत्थर, कोयला, सिलिका, एलुमिनियम और जिप्सम को आवश्यकता होती है। इसलिए यह उद्योग कच्चे माल के निकट स्थापित किया जाता है। पहला सीमेंट उद्योग 1904 ई. में चेन्नई में स्थापित किया गया। इस उद्योग का मुख्य रूप से विस्तार स्वतंत्रता के बाद ही हुआ। आज भारत देश के 159 बड़े तथा 332 छोटे सीमेंट उद्योग कार्यरत है। प्रत्येक वर्ष लगभग 1683 लाख टन सीमेंट उत्पादन होता है। भारतीय सीमेंट की गुणवत्ता उत्तम है। इसलिए दक्षिण और पूर्वी एशिया के देशों में इसकी मांग बहुत अधिक है। इस समय देश में प्रतिवर्ष 20 करोड़ टन से अधिक सीमेंट का उत्पादन होता है।

अथवा,

●	कोयला क्षेत्र	- झरिया
▲	लौह इस्पात कारखाना	- बोकारो
◆	तेल क्षेत्र	- डिगबोई
□	तेल शोधक कारखाना	- मथुरा
✸	परमाणु शक्ति केन्द्र	- तारापुर

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

अथवा, चावल के उत्पादन के लिए मुख्य भौगोलिक दशाएँ निम्नांकित हैं—

(i) **तापमान**—चावल एक खरीफ फसल है, जिसे उच्च तापमान तथा अधिक नमी की आवश्यकता होती है। इसके लिए पौधे के वर्धन के लिए 250 से.ग्रे. तापमान का होना पौधे के बढ़ने में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त इसके लिए यह भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि इसके पौधों को उगाने के समय तथा काटने के समय कुछ विभिन्नताओं की आवश्यकता होती है।

(ii) **वर्षा**—चावल की खेती के लिए पर्याप्त सिंचाई की आवश्यकता होती है। अत: इसके लिए अत्यधिक वर्षा का होना आवश्यक होता है अर्थात् 100 सेमी. से अधिक होना इसे कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगाया जा सकता है, परन्तु वहां सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था हो। सिंचाई की सहायता से पंजाब एवं हरियाणा में काफी मात्रा में चावल का उत्पादन होता है।

(iii) मृदा—चावल को विभिन्न मृदाओं में उपजाया जा सकता है, जैसे—सिल्ट, दुममट आदि परन्तु अभद्य चिकनी मिट्टी वाली जलोढ़ मृदा में यह बेहतर ढंग से उगाया जाता है।

(iv) उत्पादन के क्षेत्र—चावल भारत के लगभग सभी राज्यों में उगाया जाता है। परन्तु इसका अधिकतर उत्पादन नदी घाटियों, डेल्टाई प्रदेशों तथा तटीय मैदानों में होता है।

चावल उत्पादक प्रमुख राज्य हैं—पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, हरियाणा, उड़ीसा, कर्नाटक, असम तथा महाराष्ट्र।

16. (ग)

17. (क)

18. प्राचीन काल में मजदूरी प्रथा प्रचलित थी। बड़े-बड़े जमींदार सेठ साहूकार लोग निम्न जाति के लोगों को अपने कार्य करने के लिए मजदूर रखते थे और अपनी इच्छानुसार उससे कार्य करवाते थे। बिना मालिक की अनुमति के बिना वह दूसरे के यहां जाकर मजदूरी नहीं कर सकता था। तथा उसकी पारिश्रमिक अपनी इच्छानुसार देते थे। इसी प्रकार के मजदूर को बंधुआ मजदूर कहते हैं। अब वर्तमान समय में बंधुआ मजदूर की प्रथा समाप्त हो गई है।

19. ग्राम पंचायत के प्रमुख अंग निम्नलिखित है—

(i) **ग्राम सभा**—ग्राम सभा के द्वारा आम जनता की बैठक बुलायी जाती है जिसमें गांव में उत्पन्न अनेक प्रकार की समस्याएँ को रखा जाता है। यह सभा मुखिया की सदस्यता में किया जाता है।

(ii) **मुखिया**—मुखिया ग्राम का प्रधान होता है। ग्राम की सभी प्रकार समस्याओं के निदान हेतु मुखिया की जिम्मेवारी होती है।

(iii) **उप-मुखिया**—सभी वार्ड सदस्य मिलकर एक उप-मुखिया का चुनाव करते हैं। जो मुखिया की अनुपस्थिति में कार्य करती है।

(iv) **पंचायत सचिव**—पंचायत सचिव का एक पद है जो सरकारी सेवा में होते हैं जो मुखिया की अध्यक्षता में कार्य सभा का संचालन करते हैं।

(v) **ग्राम रक्षा दल**—ग्राम रक्षा दल भी सरकारी पद होता है जिसकी बहाली ग्राम स्तर पर की जाती है।

20. सत्ता की साझेदारी एक ऐसी कुशल राजनीतिक पद्धति है जिसके द्वारा समाज के सभी वर्गों को देश की शासन प्रक्रिया में भागीदारी बनाया जाता है ताकि कोई भी वर्ग यह महसूस न करे कि उसकी अवहेलना हो रही है। वास्तव में सत्ता की भागीदारी लोकतंत्र का मूलमंत्र है। जिस

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

देश ने सत्ता की साझेदारी को अपनाया वहां गृह युद्ध की संभावना समाप्त हो जाती है। सरकार के तीनों अंगों विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका में भी सत्ता की भागीदारी को अपनाया जाता है। इस प्रकार केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों में भी सत्ता की भागीदारी के सिद्धांत पर शक्ति का बँटवारा कर दिया जाता है।

21. किसी भी लोकतंत्र में राजनीतिक दल अनिवार्य हैं। लोकतांत्रिक देशों में राजनीतिक दल जीवन के एक अंग बन चुके हैं। इसीलिए उन्हें 'लोकतंत्र का प्राण' कहा गया है। लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली में राजनीतिक दलों के निम्नलिखित प्रमुख कार्य हैं—

(i) नीतियाँ एवं कार्यक्रम तय करना—राजनीतिक दल जनता का समर्थन प्राप्त करने के लिए नीतियाँ एवं कार्यक्रम तैयार करते हैं। इन्हीं नीतियों और कार्यक्रमों के आधार पर ये चुनाव लड़ते हैं। राजनीतिक दल भाषण, टेलीविजन, रेडियो, समाचार-पत्र आदि के माध्यम से अपनी नीतियाँ एवं कार्यक्रम जनता के सामने रखते हैं और मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश करते हैं। मतदाता भी उसी राजनीतिक दल को अपना समर्थन देते हैं जिसकी नीतियाँ एवं कार्यक्रम जनता के कल्याण के लिए एवं राष्ट्रीय हित को मजबूत करनेवाला होता है।

(ii) शासन का संचालन—राजनीतिक दल चुनावों में बहुमत प्राप्त करके सरकार का निर्माण करते हैं। जिसे राजनीतिक दल को बहुमत प्राप्त नहीं होता है उन्हें विपक्षी दल कहते हैं। जहाँ एक ओर सत्तापक्ष शासन का संचालन करता है वहीं विपक्षी दल सरकार पर नियंत्रण रखता है और सरकार को गड़बड़ियाँ करने से रोकता है।

(iii) चुनावों का संचालन—जिस प्रकार लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था में राजनीतिक दलों का होना आवश्यक है, उसी प्रकार दलीय व्यवस्था में चुनाव का होना भी आवश्यक है। राजनीतिक दल अपनी विचारधाराओं और सिद्धांतों के अनुसार कार्यक्रम एवं नीतियाँ तय करते हैं। यही कार्यक्रम एवं नीतियाँ चुनाव के दौरान जनता के पास रखते हैं जिसे चुनाव घोषणा-पत्र कहते हैं। राजनीतिक दल अपने उम्मीदवारों को खड़ा करने और उन्हें चुनाव जीतने का प्रयत्न करते हैं।

(iv) लोकमत का निर्माण—लोकतंत्र में जनता की सहमति या समर्थन से ही सत्ता प्राप्त होती है। इसके लिए शासन की नीतियों पर लोकमत प्राप्त करना होता है और इस तरह के लोकमत का निर्माण राजनीतिक दल के द्वारा ही हो सकता है।

(v) सरकार एवं जनता के बीच मध्यस्थ का कार्य—राजनीतिक दल का एक प्रमुख कार्य है जनता और सरकार के बीच मध्यस्थता करना। राजनीतिक दल ही जनता की समस्याओं और आवश्यकताओं को सरकार के सामने रखते हैं और सरकार की कल्याणकारी योजनाओं और कार्यक्रमों को जनता तक पहुंचाते हैं।

(vi) राजनीतिक प्रशिक्षण—राजनीतिक दल मतदाताओं को राजनीतिक प्रशिक्षण देने का भी काम करता है। राजनीतिक दल खासकर चुनावों के समय अपने समर्थकों को राजनैतिक कार्य; जैसे—मतदान करना, चुनाव लड़ना, सरकार की नीतियों की आलोचना करना या समर्थन करना आदि बताते हैं।

अथवा, भाषा के चलते देश में किसी प्रकार की अड़चन या बलवा न होने देना भाषा नीति कहलाती है। भारत में 114 भाषाएँ बोली जाती है। हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है। संविधान के अनुसार सरकारी काम काज की भाषा में अंग्रेजी के प्रयोग के निषेध के बावजूद गैर हिन्दी भाषी प्रदेशों की माँग के कारण अंग्रेजी का प्रयोग जारी है। तमिलनाडु में इसके लिए उग्र आंदोलन हुआ। इस विवाद को सरकार ने हिन्दी या अंग्रेजी भाष के प्रयोग को मान्यता देकर सुलझाया।

22. (ग), **23.** (ख)

24. आधारभूत संरचना एक ऐसी सुविधा है जो देश के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। बेहतर बुनियादी सुविधाएँ ही आर्थिक विकास को बेहतर बना सकती है।

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

25. आर्थिक विकास की जिस पद्धति या प्रक्रिया से समाज के सभी वर्गों का जीवन स्तर ऊंचा होता जाए तथा समाज का कोई भी वर्ग विकास के लाभ से अछूता न रहे तो ऐसे ही विकास की क्रिया को समावेशी विकास कहा जाता है।

26. समाज की कुल आय को वस्तुओं एवं सेवाओं पर खर्च किया जाता है। कुछ वस्तुओं का उपयोग, तत्काल उपयोग करते हैं तथा कुछ टिकाऊ वस्तुएँ जो उत्पादन के कार्य में प्रयोग की जाती हैं। अर्थात् कुल आय का वह भाग जो टिकाऊ वस्तुओं पर किया जाता है उसे बचत (Saving) कहते हैं। अत: स्पष्ट है कि आय (Income) तथा उपभोग (Consumption) का अंतर बचत कहलाता है।

27. वैश्वीकरण के समर्थक भारत में वैश्वीकरण के पक्ष में निम्नलिखित तर्क देते हैं—

(i) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रोत्साहन—वैश्वीकरण से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रोत्साहित होगा। जिससे भारत जैसे विकासशील देश अपने विकास के लिए पूंजी प्राप्त कर सकेगा।

(ii) प्रतियोगी शक्ति में वृद्धि—वैश्वीकरण की नीति के फलस्वरूप भारत जैसे विकासशील देशों की प्रतियोगी शक्ति में वृद्धि होगी और अर्थव्यवस्था का त्वरित विकास हो सकेगा।

(iii) नई प्रौद्योगिकी के विकास में सहायक—वैश्वीकरण भारत जैसे विकासशील देशों को विकसित देशों द्वारा तैयार की गई नई प्रौद्योगिकी के प्रयोग में सहायता प्रदान करता है।

(iv) अच्छी उपभोक्ता वस्तुओं की प्राप्ति—वैश्वीकरण भारत जैसे विकासशील देशों को अच्छी-अच्छी गुणवत्ता की उपभोग वस्तुओं को सापेक्षत: कम कीमत पर प्राप्त करने के योग्य बनाता है।

(v) नये बाजार तक पहुंच—वैश्वीकरण के फलस्वरूप भारत जैसे विकासशील देशों के लिए दुनिया के बाजारों तक पहुंच का मार्ग प्रशस्त हो जायेगा।

(vi) उत्पादन तथा उत्पादिता के स्तर को उन्नत करना—वैश्वीकरण से ज्ञान का तेजी से प्रसार होता है और इसके परिणामस्वरूप भारत जैसे विकासशील देश अपने उत्पादन और उत्पादिकता के स्तर को उन्नत कर सकते हैं।

अथवा, विश्व व्यापार संगठन (World Trade organisation W.T.O.)— यह एक ऐसा संगठन है, जिसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को उदार बनवाना है, इस संगठन की स्थापना जनवरी 1995 ई. में की गई थी। भारत इसका संस्थापक सदस्य रहा है। वर्तमान में 149 देश विश्व व्यापार संगठन (2006) के सदस्य है। इसका मुख्यालय जेनेवा में है। यह संगठन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित नियमों को निर्धारित करता है और देखता है कि इन नियमों का पालन हो विश्व व्यापार संगठन सभी देशों को मुक्त व्यापार की सुविधा देता है। परन्तु विकसित देशों को अनुचित ढंग से व्यापार अवरोधकों को बना रखा है। दूसरी ओर विकासशील देशों पर दबाव डालकर उन्हें व्यापार अवरोधकों को हटाने के लिए विवश कर दिया जाता है।

28. (घ)

29. (ग)

30. आपदा— प्राकृतिक ऐसी घटना जो एकाएक घट जाती है जिसके बारे में मनुष्य को पहले से कोई जानकारी इस घटना के बारे नहीं होती है। उसे आपदा कहते हैं। आपदा कई प्रकार के होते हैं। जैसे—ओला पड़ना, आंधी आना, भूकम्प आना, बाढ़ आना, समुद्री तुफान आना, सुनामी, सुखाड़, चक्रवात, हिमस्खलन, भूस्खलन इत्यादि सभी प्राकृतिक आपदा के अन्तर्गत आते हैं।

●●●

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com